



Study AV Kand 14 Hindi

Atharva Veda 14.1.1, 2

अथर्ववेद 14.1.1

सत्येनोत्तमिता भूमिः सूर्येणोत्तमिता द्यौः।
ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधि श्रितः॥१॥

(सत्येन) सत्य से (उत्तमिता) धारण होती है (भूमिः) धरती, शरीर (सूर्येण) सूर्य से (उत्तमिता) धारण होती है (द्यौः) आकाशीय अन्तरिक्ष (ऋतेन) नियमितता से, अनुशासन से (आदित्याः) प्रकाश, ज्ञान की किरणें (तिष्ठन्ति) स्थापित है (दिवि) प्रकाश में, दिव्यता में (सोमः) शुभ गुण, दिव्य ज्ञान, चन्द्रमा (अधि श्रितः) निर्भर है।

नोट :- ऋग्वेद 10.85.1 तथ अथर्ववेद 14.1.1 समान है।

व्याख्या :-

भिन्न दिव्यताओं के क्या दिव्य आधार हैं?

(क) धरती, यह शरीर, सत्य से धारण होता है।

(ख) आकाशीय अन्तरिक्ष सूर्य से धारण होता है।

(ग) प्रकाश की किरणें तथा ज्ञान की किरणें नियमितता तथा अनुशासन से स्थापित होती हैं।

(घ) शुभ गुण, दिव्य ज्ञान तथा चन्द्रमा प्रकाश तथा दिव्यता पर निर्भर करते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

वह कौन सा सर्वोच्च सत्य है जो इस सृष्टि में सबका आधार है?

व्यापक स्तर पर, परमात्मा सर्वोच्च सत्य है, जिसकी सर्वोच्च दिव्यता पर भूमि तथा सभी सौर मण्डलों के सभी आकाशीय पिण्ड टिके हुए हैं। वह सर्वोच्च है और प्रत्येक अस्तित्वमय वस्तु का दिव्य आधार है। सूक्ष्म स्तर पर, हमारा शरीर भी सत्य व्यवहार से धारण होता है, अन्यथा इसमें शारीरिक और मानसिक असंतुलन पैदा होते हैं जो रोगों और अपराधों में फंस जाता है।

सभी ऊर्जाओं का प्रथम तथा अग्रणी स्रोत अर्थात् सूर्य समूचे आकाशीय अन्तरिक्ष का पोषण करता है। यह भी सर्वोच्च दिव्यता का एक अंग है। सूर्य की ऊर्जा न केवल भौतिक प्रकाश देती है अपितु हमें आध्यात्मिक प्रकाश की अनुभूति के योग्य भी बनाती है। सूर्य की किरणें नियमित और अनुशासित प्रकृति की हैं। यही एक लक्षण हमें अपने जीवन में प्रकाश और ज्ञान की किरणों का विकास करने के योग्य बना सकता है।

सभी शुभ गुण, दिव्य ज्ञान आदि प्रकाश की किरणों पर ही निर्भर करते हैं, जो हमारी, भौतिक और आध्यात्मिक, पूर्ण प्रगति का आधार बन जाते हैं। यहाँ तक कि चन्द्रमा भी सूर्य के प्रकाश से ही चमकता है। इसी प्रकार हमारे अन्दर ज्ञान का सूर्य उदय होने पर हमारा मन रूपी चन्द्रमा भी चमक उठेगा।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अतः, सर्वोच्च सत्य, परमात्मा, सभी दिव्यताओं का आधार है। हमें उस सर्वोच्च सत्य के साथ नियमित सम्पर्क बनाकर रखना चाहिए।

सूक्ति 1 :- (सत्येन उत्तमिता भूमिः — अथर्ववेद 14.1.1, ऋग्वेद 10.85.1) धरती, यह शरीर, सत्य से धारण होता है।

सूक्ति 2 :- (सूर्येण उत्तमिता द्यौः — अथर्ववेद 14.1.1, ऋग्वेद 10.85.1) आकाशीय अन्तरिक्ष सूर्य से धारण होता है।

सूक्ति 3 :- (ऋतेन आदित्याः तिष्ठन्ति — अथर्ववेद 14.1.1, ऋग्वेद 10.85.1) प्रकाश की किरणें तथा ज्ञान की किरणें नियमितता तथा अनुशासन से स्थापित होती हैं।

सूक्ति 4 :- (दिवि सोमः अधि श्रितः — अथर्ववेद 14.1.1, ऋग्वेद 10.85.1) शुभ गुण, दिव्य ज्ञान तथा चन्द्रमा प्रकाश तथा दिव्यता पर निर्भर करते हैं।

अथर्ववेद 14.1.2

सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही।
अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः॥2॥

(सोमेन) सोम के साथ अर्थात् शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और चन्द्रमा के साथ (आदित्या) ज्ञान की किरणें, सूर्य की किरणें (बलिनः) बलशाली हो जाती है (सोमेन) सोम के साथ अर्थात् शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और चन्द्रमा के साथ (पृथिवी) धरती, शरीर (मही) महान्, महत्त्वपूर्ण हो जाता है (अथ) अब (उ) और (नक्षत्राणाम्) ब्रह्माण्डीय तारें, विज्ञान की भिन्न-भिन्न उपलब्धियाँ (एषाम्) इनका (उपस्थे) निकट (सोम) शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और चन्द्रमा (आहितः) स्थापित।

नोट :- ऋग्वेद 10.85.2 तथ अथर्ववेद 14.1.2 समान है।

व्याख्या :-

सोम क्या है?

सोम अर्थात् शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और चन्द्रमा। शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान से ही ज्ञान की किरणें बलशाली हो जाती हैं। शुभ गुणों तथा दिव्य ज्ञान से यह शरीर महान् और महत्त्वपूर्ण हो जाता है और अब, इसके बाद, विज्ञान की भिन्न-भिन्न उपलब्धियाँ शुभ गुणों के पास ही स्थापित होती हैं।

वैज्ञानिक अर्थ — चन्द्रमा के साथ ही प्रकाश की किरणें बलशाली होती हैं। चन्द्रमा के साथ धरती महान् और महत्त्वपूर्ण हो जाती है। और फिर इसके बाद चन्द्रमा के निकट भिन्न-भिन्न आकाशीय तारे स्थापित हो जाते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

धरती के लिए सूर्य का क्या महत्त्व है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



एक पवित्र व्यक्ति और अन्य लोगों के लिए शुभ गुणों का महत्त्व क्या है?

चन्द्रमा प्रकृति से शीतल है। सूर्य की किरणें चन्द्रमा पर पड़ती हैं तो शीतल हो जाती हैं और तापमान में बदलाव के लिए धरती पर प्राप्त होती हैं। इस प्रकार चन्द्रमा ही धरती को जीने योग्य बनाता है। चन्द्रमा के निकट भिन्न-भिन्न तारें स्थापित हैं। जबकि केवल चन्द्रमा ही गतिमान तारा है। यह धरती माता के लिए प्राकृतिक उपग्रह है, जो धरती माता ने सभी जीवों का अपनी गोद में पालन-पोषण करती है।

शुभ लक्षणों और परमात्मा के बीच यही अनुपात लागू होता है। शुभ गुण चन्द्रमा की तरह कार्य करते हैं, हमारे मन को शीतल रखते हैं, शुभ गुणों वाले पवित्र व्यक्ति पर दिव्य आशीर्वादों की वर्षा होती है जो उसे महान्, श्रेष्ठ और दिव्य बना देती है। शुभ गुण भी एक दिव्य उपग्रह की तरह कार्य करते हैं जो धारक के साथ-साथ उसका अनुसरण करने वाले अनेकों अन्य लोगों का भी पालन-पोषण करते हैं।

सूक्ति :- (सोमेन् आदित्या बलिनः सोमेन पृथिवी – अथर्ववेद 14.1.2, ऋग्वेद 10.85.2) सोम अर्थात् शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और चन्द्रमा। शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान से ही ज्ञान की किरणें बलशाली हो जाती हैं।

This file is incomplete/under construction